

‘संधि’ शब्द का अर्थ है ‘जोड़’ या ‘मेल’। भाषा व्यवहार में जब दो शब्द पास-पास आते हैं तो पहले शब्द की अंतिम ध्वनि बाद वाले शब्द की पहली ध्वनि से मिलकर उसे प्रभावित करती है। ध्वनि-परिवर्तन की इस प्रक्रिया का नाम ही संधि है। इस प्रक्रिया में परिवर्तन कभी पहली ध्वनि में होता है तो कभी दूसरी ध्वनि में और कभी दोनों ध्वनियों में। वर्णों में संधि कभी स्वरों के बीच होती है, तो कभी स्वर और व्यंजन के बीच। इसी तरह कभी विसर्ग और स्वर के साथ होती है और कभी विसर्ग और व्यंजन के साथ। संधि दो ध्वनियों में होती है, दो शब्दों में नहीं। यदि वर्णों का मेल हो परंतु उसके कारण उनमें किसी तरह का ध्वनि परिवर्तन न हो तो उसे वर्ण-संयोग कहते हैं, संधि नहीं। संधि में वर्ण-संयोग तो होता ही है, साथ ही ध्वनि में भी परिवर्तन हो जाता है। संधियुक्त पदों को अलग-अलग किया जाता है तो उसे संधि-विच्छेद कहते हैं।

संधि तीन प्रकार की मानी जाती हैं।

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि।

स्वर संधि

दो स्वरों के परस्पर मेल के कारण जब एक या दोनों स्वरों में परिवर्तन होता है तो उसे स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि के निम्नलिखित भेद माने जाते हैं-

- (i) दीर्घ संधि (ii) गुण संधि (iii) वृद्धि संधि (iv) यण संधि

1. दीर्घ संधि - जब ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, के बाद क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आते हैं तो दोनों ध्वनियाँ मिलकर क्रमशः आ, ई, ऊ में परिवर्तित हो जाती है: ये ध्वनियाँ ह्रस्व + ह्रस्व, ह्रस्व + दीर्घ, दीर्घ + ह्रस्व, दीर्घ + दीर्घ स्वर रूपों के अंतर्गत किसी भी प्रकार से मिल सकती है जैसे-

मत	+	अनुसार	(अ + अ = आ)	=	मतानुसार
देव	+	आलय	(अ + आ = आ)	=	देवालय
शिक्षा	+	अर्थी	(आ + अ = आ)	=	शिक्षार्थी

विद्या	+	आलय	(आ + आ = आ)	=	विद्यालय
रवि	+	इंद्र	(इ + इ = ई)	=	रवींद्र
गिरि	+	ईश	(इ + ई = ई)	=	गिरीश
रजनी	+	ईश	(ई + ई = ई)	=	रजनीश
लघु	+	उत्तर	(उ + उ = ऊ)	=	लघूत्तर

2. **गुण संधि** - 'अ' या 'आ' के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या ऋ स्वर आता है तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ तथा अर हो जाता है: जैसे-

सुर	+	इंद्र	(अ + इ = ए)	=	सुरेंद्र
परम	+	ईश्वर	(अ + ई = ए)	=	परमेश्वर
रमा	+	इंद्र	(आ + इ = ए)	=	रमेंद्र
उमा	+	ईश	(आ + ई = ए)	=	उमेश
पर	+	उपकार	(अ + उ = ओ)	=	परोपकार
महा	+	उद्य	(आ + उ = ओ)	=	महोदय
देव	+	ऋषि	(अ + ऋ = अर्)	=	देवर्षि
महा	+	ऋषि	(आ + ऋ = अर्)	=	महर्षि

3. **वृद्धि संधि** - वृद्धि संधि में 'अ' या 'आ' के बाद यदि ए या ऐ हो तो दोनों मिलकर 'ऐ' तथा ओ या औ हो तो दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं: जैसे-

एक	+	एक	(अ + ए = ऐ)	=	एकैक
मत	+	ऐक्य	(अ + ऐ = ऐ)	=	मतैक्य
सदा	+	एव	(आ + ए = ऐ)	=	सदैव
वन	+	ओषधि	(अ + ओ = औ)	=	वनौषधि
परम	+	औदार्य	(अ + औ = औ)	=	परमौदार्य

4. **यण् संधि** - इ, ई, उ, ऊ, या ऋ के बाद यदि कोई अन्य स्वर आ जाए तो इ/ई का 'य', उ/ऊ का व् तथा ऋ का र् हो जाता है, और पहले शब्द का अंतिम व्यंजन स्वर रहित हो जाता है: जैसे-

अति	+	अधिक	(इ + अ = य)	=	अत्यधिक
इति	+	आदि	(इ + आ = या)	=	इत्यादि
प्रति	+	उपकार	(इ + उ = यु)	=	प्रत्युपकार
प्रति	+	एक	(इ + ए = ये)	=	प्रत्येक

सु	+	आगत	(उ + आ = वा)	=	स्वागत
पितृ	+	आज्ञा	(ऋ + आ = रा)	=	पित्राज्ञा

व्यंजन संधि

1. अगर प्रथम शब्द के अंत में अघोष व्यंजन हो और दूसरे शब्द के शुरू में सघोष व्यंजन या कोई स्वर हो तो पहले शब्द के अंत वाले अघोष व्यंजन के स्थान पर उसी वर्ग का सघोष व्यंजन हो जाता है, अर्थात् 'क्' का 'ग', 'ट्' का 'ड', 'त्' का 'द' आदि हो जाता है: जैसे-

दिक्	+	गज	(क् + ग = गग)	=	दिगगज
दिक्	+	अंबर	(क् + अ = ग)	=	दिगंबर
षट्	+	आनन	(ट् + आ = डा)	=	षडान्न
सत्	+	गुण	(त् + ग = द्ग)	=	सद्गुण

2. वर्गों के प्रथम वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद न् या म् वर्ण के आने पर उनके स्थान पर क्रमशः उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण आ जाता है: जैसे-

वाक्	+	मय	(क् + म = इम)	=	वाइमय
जगत्	+	नाथ	(त् + न = न्न)	=	जगन्नाथ
चित्	+	मय	(त् + म = न्म)	=	चिन्मय
उत्	+	मत्त	(त् + म = न्म)	=	उन्मत्त

3. (क) त् के बाद अगर ल् हो तो 'त्' ध्वनि 'ल्' में बदल जाती है: जैसे-

उत् + लेख = उल्लेख

उत् + लास = उल्लास

- (ख) त् या द् के बाद यदि ज् हो तो त्/द् 'ज्' में बदल जाता है : जैसे-

सत् + जन = सज्जन

उत् + ज्वल = उज्ज्वल

- (ग) त् या द् के बाद यदि श् हो तो त्/द् का च् का छ हो जाता है : जैसे-

उत् + श्वास = उच्छ्वास

- (घ) त् या द् के बाद यदि च् हो तो त् का च् हो जाता है : जैसे-

उत् + चारण = उच्चारण

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

विसर्ग संधि

1. विसर्ग के पूर्व यदि 'अ' हो और बाद में सघोष व्यंजन हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर 'ओ' हो जाता है: जैसे-

मनः	+	भाव	=	मनोभाव
अधः	+	गति	=	अधोगति
2. यदि विसर्ग से पहले 'अ' या 'आ' को छोड़कर और कोई स्वर हो बाद में कोई स्वर या सघोष व्यंजन हो तो विसर्ग का 'रू' हो जाता है: जैसे-

निः	+	आशा	=	निराश
दुः	+	उपयोग	=	दुरुपयोग
बहिः	+	मुख	=	बहिर्मुख
3. यदि विसर्ग के बाद 'च' या 'छ' हो तो विसर्ग का 'श्' हो जाता है: जैसे-

निः	+	चल	=	निश्चल
निः	+	छल	=	निश्छल
4. यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' हो और बाद में क, ट, ठ, प या फ हो तो विसर्ग का ष् हो जाता है: जैसे-

निः	+	कपट	=	निष्कपट
दुः	+	कर्म	=	दुष्कर्म
निः	+	पक्ष	=	निष्पक्ष
निः	+	फल	=	निष्फल
5. यदि विसर्ग के बाद 'श', 'ष' 'स' हो तो विसर्ग या तो यथावत रहता है या 'श' के पहले 'श्' और 'स' के पहले 'स्' हो जाता है: जैसे-

दुः	+	शासन	=	दुःशासन, दुश्शासन
निः	+	संदेह	=	निःसंदेह, निस्संदेह

हिंदी की अपनी संधियाँ

उपर्युक्त संधि-नियम संस्कृत शब्दों पर लागू होते हैं। हिंदी में जब दो भिन्न शब्द एक साथ आते हैं तो वे संधि नियम के अनुसार जुड़ कर एक ही शब्द के रूप में अथवा समस्त पद के रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे-राम + अभिलाषा-रामाभिलाषा न होकर राम-अभिलाषा ही रहता है।

हिंदी के अपने शब्दों में मेल के लिए कुछ नियम विकसित हो गए हैं: जैसे-

(क) **ह्रस्वीकरण** - सामासिक शब्दों में पूर्वपद के दीर्घ स्वर प्रायः ह्रस्व हो जाते हैं: जैसे-

आम	+	चूर	=	अमचूर
हाथ	+	कड़ी	=	हथकड़ी
लड़का	+	पन	=	लड़कपन
कान	+	कटा	=	कनकटा।

(ख) **लोप-कभी-कभी** हिंदी शब्दों की संधि में किसी वर्ण का लोप ही हो जाता है जैसे:

पानी	+	घाट	=	पनघट
घोड़ा	+	दौड़	=	घुड़दौड़
छोटा	+	पन	=	छुटपन

ध्यान दीजिए कि अभी (अब + ही), तभी (तब + ही), सभी (सब + ही), वही (वह + ही) जैसे शब्दों में भी दो निकटस्थ ध्वनियों के मिलने से परिवर्तन हुआ है, किंतु अब ये स्वतंत्र शब्द के रूप में मान्य है।

प्रश्न-अभ्यास

1. संधि किसे कहते हैं ? सोदाहरण समझाइए।
2. स्वर संधि के कितने भेद होते हैं ? इनके नियम बताते हुए प्रत्येक के चार उदाहरण दीजिए।
3. व्यंजन संधि के किन्हीं चार नियमों को सोदाहरण समझाइए।
4. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए।
सत् + गति, वट् + दर्शन, जगत् + नाथ, सत् + चरित्र।
5. संधि-विच्छेद कीजिए।
उन्नति, सज्जन, उल्लास, चिन्मय, अधोगति
6. निम्नलिखित में संधि कीजिए।
मनः अनुकूल, निः + रोग, दुः + कर।
7. निम्नलिखित में संधि कीजिए-
सूर्य + अस्त, सदा + एव, दिक् + गज, चंद्र + उदय, दुः + कर्म, रेखा + अंकित, महा + ऋषि, तथा + एव।

